

## विचार बिन्दु

संस्कृति का वजूद उसकी भाषा के बिना नहीं हो सकता। संस्कृति और भाषा का आपस में अटूट नाता होता है। इसलिए किसी भी संस्कृति के गौरव में उसकी भाषा का महत्व निहित होता है। -अज्ञात

## मातृभाषा की संवैधानिक मान्यता बिना कैसा राजस्थान दिवस!

आती 30 मार्च को प्रतिवर्ष की भांति राजस्थान दिवस मनाया जायेगा। इस मौके राज्य सरकार ने पांच दिन चलने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम बनाये हैं। प्रदेश के शासन में बैठे सभी राजनेता इस प्रदेश की संस्कृति पर इतराये, भाषण देंगे, देशी-विदेशी पांवों के सामने नाच-गाने करावेंगे, मगर ये यहां के लोगों की मातृभाषा की संवैधानिक मान्यता के बारे में कुछ नहीं बोलेंगे। प्रतिस्पर्धी चुनावी राजनीति के फंदों में फंसे रहने वाले हमारे प्रतिनिधियों को खयाल ही नहीं है कि किसी भी संस्कृति का वजूद उसकी भाषा के बिना नहीं हो सकता। संस्कृति और भाषा का आपस में अटूट नाता होता है। इसलिए किसी भी संस्कृति के गौरव में उसकी भाषा का महत्व निहित होता है। भाषा सिर्फ संवाद का माध्यम ही नहीं होती, वह संस्कृति का प्रमाण भी होती है। किसी विद्वान ने कहा है कि-“यदि संस्कृति एक घर है, तो भाषा उसके सामने के दरवाजे की तथा अंदर के सभी कमरों की कुंजी है।” किसी भी समाज को अनिवायतन: अपनी भाषा में रहना होता है, अन्यथा उसकी पहचान कुंठित हो जाती है और वह छिन्न-भिन्न हो जाता है। अपनी मातृभाषा को बचाए रखना किसी भी समाज के लिए उसके अस्तित्व का प्रश्न होता है। इसलिए राजस्थान दिवस के सांस्कृतिक आयोजनों के शासकीय आयोजक राजस्थानी भाषा की संवैधानिक मान्यता दिलाने के लिए कुछ ठोस करें इसकी अपेक्षा मत्ते ही अन्य स्थानों से आकर इस प्रदेश में बस गये लोग न करें किन्तु यहां के मूल वाशियों की यह कामना तो होगी ही। 'एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' के अनुसार भाषा के माध्यम से मानव, एक सामाजिक समूह के सदस्य और उसकी संस्कृति में भागीदार के रूप में, स्वयं को अभिव्यक्त करता है। अपनी पुस्तक 'द राइज ऑफ इंग्लिश: ग्लोबल पॉलिटेक्स एंड द पावर ऑफ लैंग्वेज' में रोजमिरी सलोमोने ने बताया है: "दुनिया की प्रमुख भाषा अंग्रेजी दुनिया भर में नए सांस्कृतिक और वैश्वीय दाग पैदा करती है, और वैश्वीकरण की प्रकृति को ही प्रतिबिंबित करती है।" ऐसा ही भारत में हिन्दी के लिए कहा जा सकता है। कैसी विडंबना है कि राजस्थानी संस्कृति को तो स्वीकार किया जाता है मगर राजस्थानी भाषा को मान्यता देने में आनाकानी की जाती है। राजस्थानी संस्कृति के साथ उसकी भाषा अपरिहार्य हैं। यदि राजस्थानी भाषा को मान्यता के लिए राज में बैठे लोग कदम नहीं उठाते हैं तो यही माना जाएगा कि राजस्थानी संस्कृति का गुणगान वे सिर्फ दिखावे के लिए करते हैं। हमारा एक बड़ा भारतीय समाज है। लेकिन यह भी सच है कि वृहद भारतीय समाज के भीतर अनेक समाज हैं जिनकी अपनी पहचान है जिनमें उनकी भाषाई पहचान भी एक है। राजस्थान के लोगों की अपनी मातृभाषा की मान्यता की जद्दोजहद इसी सांस्कृतिक पहचान बनाये रखने की है।

वर्ष 1949 की 30 मार्च को प्रथमंजी सरदार वल्लभ भाई पटेल ने रियासतों के विलय के बाद बने नये राज्य 'राजस्थान' का जयपुर में उद्घाटन किया था। तब इस राज्य की भाषा राजस्थानी थी। मगर यहां के तत्कालीन नेतृत्व नेदेश की एकता के हित में हिन्दी का साथ इस आशा के साथ दिया था कि सदियों से चली आ रही राजस्थानी भाषा भी आदर और अपना हक पाती रहेगी। भारत संघ के संवैधानिक इकाई बनने के बाद 1951 में हुई पहली जनगणना के अधिकृत आंकड़े राजस्थानी भाषा की कहानी खुद कहते हैं। उस जनगणना में भाषा के बारे में दो सवाल पूछे गये थे आपकी मातृभाषा कौनसी है और आप अपनी मातृभाषा के अलावा और कौन सी भारतीय भाषा जानते हैं। इस जनगणना में राजस्थान की 69.84 प्रतिशत तथा अजमेर की 75.20 प्रतिशत आबादी की भाषा राजस्थानी पाई गई। हिन्दी को राजस्थान के केवल 21.98 प्रतिशत लोगों ने अपनी भाषा बताया जबकि अजमेर के मात्र 15.40 प्रतिशत लोगों ने हिन्दी को अपनी मातृभाषा बताया। जनगणना में भाषा और बोली के आंकड़ों का भी विश्लेषण किया गया। नये बने प्रदेश की भाषा को राजस्थानी बताते हुए उसकी 17 बोलियां बताई गईं जबकि हिन्दी की पांच बोलियां बताई गईं। यानि राजस्थानी हिन्दी से अधिक समृद्ध थी। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाएं शामिल की हुई हैं, लेकिन राजस्थानी भाषा के साथ दुर्भाग्य की तरह है। के. डेविड हेरिसन ध्यान में लाये थे कि जब कोई भाषा भर जाती है तो क्या उसे जाना है? किसी भाषा की संरचना और शब्दावली में किस प्रकार का ज्ञान अंतर्निहित होता है और उसका खोना मानवता के लिए कितना हानिकारक होता है! मातृभाषाएं ज्ञान को व्यापक और

**राजस्थानी को मान्यता न देना यहां के बच्चों के अधिकार का भी हनन भी है। संविधान का निर्देश है कि प्रत्येक बालक का अधिकार है कि वह अपनी मातृभाषा में प्रारम्भिक शिक्षा पाये। दुर्भाग्य से नयी शिक्षा नीति राजस्थानियों की भाषा हिन्दी मानते हुए राजस्थानी में प्रारम्भिक शिक्षा का निषेध करती है। राजस्थान के ग्रामीण इलाकों के बच्चे इसलिए पिछड़ रहे हैं क्योंकि उनकी प्राथमिक शिक्षा उनकी मातृभाषा में न होकर उनके लिए अजनबी हिन्दी में होती है। इससे कोई भी इनकार नहीं कर सकता कि राजस्थानी भाषा इस प्रदेश की समृद्ध संस्कृति और इतिहास से जुड़ी हुई है। यह भाषा लोकगीतों, कविताओं, और परंपराओं में गहरे से समाहित है।**

मांग है। भाषा सांस्कृतिक विरासत का एक संवेदनशील पहलू होती है। मातृभाषा का उपयोग सांस्कृतिक पहचान की सुरक्षा में मदद करता है और उनकी पारंपरिक विरासत को सुरक्षित रखता है। समझने की बात ये है कि राजस्थान के विभिन्न भूभागों की बोलियों, परंपराएं, मूल्य और आदर्श सब मिलकर इस प्रदेश के लोगों को उनकी परिभाषा देते हैं। ये परिभाषा इस रंगीले प्रदेश को आकार देती है जो विविधता और एकता का अत्यंत ही सुंदर उदाहरण है, उसी तरह जिस प्रकार हमारा देश भारत है। यह जान कर किसी को अचरज नहीं होना चाहिए कि राजस्थानी सांस्कृतिक समाज में पिछले सैकड़ों वर्षों से भारतीय संविधान के सभी मूल तत्व पाये जाते रहे हैं। राजस्थानी भाषा को मान्यता न देना यहां के रीति-रिवाजों, ज्ञान, विरासत और पूर्वजों की यादों को विस्मृत करना है। राजस्थानी को मान्यता न देना यहां के बच्चों के अधिकार का भी हनन भी है। संविधान का निर्देश है कि प्रत्येक बालक का अधिकार है कि वह अपनी मातृभाषा में प्रारम्भिक शिक्षा पाये। दुर्भाग्य से नयी शिक्षा नीति राजस्थानियों की भाषा हिन्दी मानते हुए राजस्थानी में प्रारम्भिक शिक्षा का निषेध करती है। राजस्थान के ग्रामीण इलाकों के बच्चे इसलिए पिछड़ रहे हैं क्योंकि उनकी प्राथमिक शिक्षा उनकी मातृभाषा में न होकर उनके लिए अजनबी हिन्दी में होती है। इससे कोई भी इनकार नहीं कर सकता कि राजस्थानी भाषा इस प्रदेश की समृद्ध संस्कृति और इतिहास से जुड़ी हुई है। यह भाषा लोकगीतों, कविताओं, और परंपराओं में गहरे से समाहित है। जो भी लोककला, नृत्य, संगीत या साहित्य है, उसका आधार राजस्थानी भाषा है। इस भाषा की हजार साल से अधिक की समृद्ध साहित्यिक परंपरा को दुनिया भर के भाषा विज्ञानी मान चुके हैं। इसका साहित्य भारतीय साहित्य जगत में एक अनमोल धरोहर मानी जाती है। राजस्थानी भाषा में रचा गया विशाल भक्ति काव्य इस प्रदेश की सीमाओं के पार दूर तक जाकर लोकप्रिय हुआ है। राजस्थानी भाषा इस प्रदेश की पहचान है। यहां के लोगों का अपनी स्थानीय संस्कृति और पहचान को मजबूत करना चाहना स्वाभाविक है। राजस्थानी भाषा के साहित्य ने राष्ट्रीय एकता के निर्माण जितना योगदान दिया है उस पर राजस्थान के लोग स्वाभाविक ही गर्व कर सकते हैं। राजस्थान के विणक देश के कोने-कोने में व्यापार करने गये और वहां के जीवन में घुल-मिल गये। व्यापारिक लेने-देने, बाजारों में इस भाषा ने अपनी भूमिका निभाई है, जिससे आर्थिक और सामाजिक संबंध ही मजबूत नहीं हुए हैं देश की एकता भी मजबूत हुई है। राजस्थानी भाषा का विरोध मुख्य रूप से कुछ राजनीतिक और सामाजिक कारणों से होता है। इसके विरोध करने वाले लोग इसे हिन्दी के विरुद्ध बताने की बेजा बात करते हैं। राजस्थानी को मान्यता की मांग हिन्दी का विरोध नहीं है। मगर हिन्दी के समर्थन के लबादे में छुप कर अनेक लोग राजस्थानी भाषा के विरोध में उतर कर विघटन की राजनीति करते हैं। वे यह कह कर अपने अज्ञान का ही परिचय देते हैं कि राजस्थानी हिन्दी का ही विकृत रूप है। राजस्थान में हिन्दी प्रमुख रूप से उपयोग में ली जाती है, मगर उसका अंग्रेजी के सामने क्या हाल है वह किसी से छुपा नहीं है। राजस्थानी भाषा की मान्यता की मांग हिन्दी को प्रतिस्पर्धित करने का प्रयास नहीं है। राजस्थानी को मान्यता मिलने से हिन्दी या अंग्रेजी की महत्ता कम नहीं हो जाती। वर्तमान युग परिवर्तन का युग है। हमारे खान-पान का परिदृश्य कल जैसा नहीं है, और कल भी वैसा नहीं रहेगा जैसा आज है। इस बदलते परिदृश्य में व्यक्ति के व्यक्तित्व और अभिव्यक्ति की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। यहीं पर मातृभाषा की अहमियत सामने आती है। प्रदेश में राजस्थानी भाषा की अहमियत है, विश्वविद्यालयों में यह भाषा पढ़ाई जाती है, आकाशवाणी और दूरदर्शन में रोज राजस्थानी के समाचार बुलेटिन प्रसारित होते हैं, राजस्थानी की पत्र-पत्रिकाएं निकलती हैं और केन्द्रीय साहित्य अकादमी इस भाषा को मानती है फिर भी दुर्भाग्य से यह भाषा संवैधानिक मान्यता से वंचित है।

-अतिथि संपादक,  
राजेन्द्र बोड़ा  
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

# दीक्षांत शिक्षा का अंत नहीं, बल्कि एक नये जीवन का आरंभ है : बागड़े

कोटा, (निर्स)। राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय, कोटा द्वारा 14वें दीक्षांत समारोह मंगलवार को केडीए ऑडिटोरियम, कोटा में आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता राज्यपाल एवं कुलाधिपति हरिभाऊ बागड़े ने की। सम्मानित अतिथि के रूप में गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.रमा शंकर दुबे उपस्थित थे। इस अवसर पर राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने विद्यार्थियों को डिग्रियां और स्वर्ण पदक प्रदान किए एवं दीक्षांत समारोह के सफल आयोजन के लिए विश्वविद्यालय और सभी छात्र-छात्राओं को बधाई व उज्वल भविष्य की शुभकामनाएं प्रदान की। कुलसचिव भावना शर्मा ने 14वें दीक्षांत समारोह के समाप्त पर विश्वविद्यालय की ओर से धन्यवाद ज्ञापन प्रदान किया।



राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय, कोटा के दीक्षांत समारोह में राज्यपाल एवं कुलाधिपति हरिभाऊ बागड़े ने विभिन्न पाठ्यक्रमों में उपाधियों प्रदान की।

आधारित है। उन्होंने विश्वविद्यालयों से आग्रह किया कि तकनीकी तथा विशिष्ट ज्ञान के क्षेत्रों के भी पाठ्यक्रम यहां अंग्रेजी के साथ हिन्दी में भी विकसित करें। स्थानीय ज्ञान-विज्ञान से संबंधित शोध एवं अनुसंधान को भी अधिकाधिक मातृभाषाओं में लाने के प्रयास शिक्षण संस्थान करें।

दीक्षांत समारोह में कुलपति प्रो.रमा शंकर दुबे ने अपने संबोधन में कहा कि राज्य में तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए राजस्थान सरकार द्वारा वर्ष 2006 में स्थापित राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय ने एक समृद्ध विरासत और गौरवशाली इतिहास बनाया है। इसके प्रत्यायन पाठ्यक्रम प्रदेश में तकनीकी शिक्षा को उच्च गुणवत्ता के प्रमाण है। उन्होंने युवाओं को देश और समाज के प्रति

अपनी सामाजिक दायित्वों के निर्वहन का सन्देश देते हुए कहा कि हमारे विद्यार्थी सामाजिक बदलाव के पथ प्रदर्शक हैं, हम सफलता के पाँच मार्गदर्शक सिद्धांत मंत्र नवोन्मेषी विचारों से भारत की आर्थिक वृद्धि को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

कुलपति प्रो.एसके सिंह ने समारोह में राज्यपाल एवं कुलाधिपति हरिभाऊ बागड़े के आमन एवं सानिध्य के लिए विश्वविद्यालय परिवार के ओर से हार्दिक आभार प्रकट किया। इस अवसर पर उन्होंने विश्वविद्यालय का प्रगति विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय विभिन्न सम्पन्न महाविद्यालयों का विकास एवं छात्रों

को प्रदान की जाने वाली शिक्षा को रोजगारपरक एवं गुणवत्तापूर्ण बनाने हेतु लगातार प्रयास कर रहा है, जिससे राज्य के शिक्षक एवं छात्र तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में सम्पूर्ण भारत ही नहीं वरन् विश्वपटल पर अपनी पहचान कायम कर सकें। उन्होंने डिग्री तथा स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाले सभी छात्र-छात्राओं को बधाई व शुभकामनाएं प्रदान की।

समारोह में विभिन्न पाठ्यक्रमों में 9521 उपाधियों प्रदान की गईं। इनमें पीएचडी के 36, एमटेक के 212, एमआरके के 1, एमबीए के 745, एमसीए के 595, बीटेक के 7817, पीएचके के 113 और बीएचएमसीटी के 2 विद्यार्थी सम्मिलित हैं। इस वर्ष कुल 7487 छात्र और 2034 छात्राओं को उपाधियां प्रदान की गईं।

राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय का 14वां दीक्षांत समारोह आयोजित

दीक्षांत समारोह में विभिन्न पाठ्यक्रमों में 9521 उपाधियां प्रदान की गईं। इसमें पीएचडी के 36, एमटेक के 212, एमआरके के 1, एमबीए के 745, एमसीए के 595, बीटेक के 7817, पीएचके के 113 और बीएचएमसीटी के 2 विद्यार्थी सम्मिलित हैं। इस वर्ष कुल 7487 छात्र और 2034 छात्राओं को उपाधियां प्रदान की गईं।

## कैलादेवी मेले से पहले श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ा, सेवा के लिए भंडारे शुरु

मेले में प्रदेश सहित उत्तर प्रदेश और हरियाणा के कई शहरों, गांवों से श्रद्धालु पहुंच रहे हैं

हिंडौन सिटी, (निर्स)। आगरा-जयपुर नेशनल हाइवे संख्या-21 से जुड़े हिंडौन-बनार-भरतपुर स्टेट हाइवे पर कैलादेवी मेले से पहले श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ा पड़ा है। पदयात्रियों के जयकारों, डीजे पर बजते भजनों और लांगुरिया की धूम से माहौल भक्तिमय हो गया है। हिंडौन-सुरौठ और हिंडौन-करोली मार्ग पर पदयात्रियों की सेवा के लिए भंडारे और चिकित्सा कैम्प सोमवार से शुरू हो गए। कई भंडारों में सुबह चाय-नाश्ते के बाद सुबह 10 से रात 12 बजे तक शुद्ध और ताजा भोजन की व्यवस्था है। कुछ कैम्पों में

चिकित्सा सेवाएं दी जा रही हैं। कहीं स्नान और विश्राम की सुविधा है। करौली जिला मुख्यालय से 25 किलोमीटर दूर त्रिकूट पर्वत पर विराजित मां कैला-चामुंडा माता के दरबार में चैत्र माह में लगने वाले लकड़ी मेले में उत्तर प्रदेश और हरियाणा के कई शहरों और गांवों से श्रद्धालु पहुंच रहे हैं। आगरा, एटा, फिरोजाबाद, मथुरा, कासगंज, रुपवास सहित कई इलाकों से पदयात्री हिंडौन होकर गुजरते हैं। इनका आगमन चैत्र माह की शीतला अष्टमी से शुरू होता है। छोटे बच्चों से लेकर युवा और बुजुर्ग तक सभी

पदयात्रियों के जयकारों, डीजे पर बजते भजनों और लांगुरिया गीतों से माहौल भक्तिमय बना

श्रद्धालु पदयात्रा में शामिल हैं। दोपहर में तैज धूप और बूढ़े ते तापमान के कारण पदयात्री भंडारों और पेड़ों की छांव में विश्राम कर रहे हैं। शाम होते ही जयकारों के साथ कैलादेवी की ओर बढ़ते हैं। जगह-जगह लगे भंडारों में सुबह और शाम

की आरती हो रही है। डीजे पर बजते लांगुरिया गीतों पर श्रद्धालु जमकर नृत्य कर रहे हैं। कई श्रद्धालु 100, 200 और 250 किलोमीटर दूर से पैदल आ रहे हैं।

भंडारों में सैकड़ों स्वयंसेवक सेवा में जुटे हैं। भोजन की व्यवस्था पंगत और बकर सिस्टम दोनों तरह से की गई है। मोहन नगर स्थित श्री श्याम मंदिर सेवा धाम की ओर से एस्टीपी प्लांट के पास पहली बार कैप लगाया गया है। इसमें पदयात्रियों के विश्राम, चिकित्सा और स्नान की सुविधा के साथ खाटूरयाम और जगदंबे का

भव्य दरवार सजाया गया है। बयाना रोड स्थित उमाशंकर सतसंग भवन में पंजाबी समाज की ओर से भंडारा चल रहा है। टीकाकुंड मंदिर में भी भंडारा है।

कोई शिशु को गोद में लिए, तो कोई छोटे रिश्ते में लिटाकर यात्रा कर रहा है। श्रद्धालुओं के जत्थे वाहन में कैलादेवी की प्रतिमा विराजित कर और अर्घ्य ज्योत जलाकर यात्रा कर रहे हैं। भंडारों से भोजन और विश्राम के लिए आमंत्रण की आवाजें, भजनों की स्वर लहरियां और लांगुरिया के शोर से पूरा कैलादेवी का भक्ति में डूबा नजर आ रहा है।

## आईजी एस परिमल ने पोकरण का दौरा किया

पोकरण, (नि.सं.)। आईजी एस परिमल ने पुलिस उपधीक्षक कार्यालय का मंगलवार को दौरा कर कार्यालय का निरीक्षण किया। इस दौरान शहर के गणमान्य नागरिकों एवं सीएलजी सदस्यों, महिला सखियों से वार्ता की।

इस अवसर पर पुलिस प्रशासन की सुरक्षा व्यवस्था, यातायात एवं महिला उरपीडन, सायबर क्राइम को लेकर महिला सखियों एवं सीएलजी सदस्यों से बहुरे क्राइम को लेकर के दिशा निर्देश दिए। वहीं प्राइवेट बस यूनियन के अध्यक्ष खुमान सिंह करनोत ने शहर की यातायात व्यवस्थाओं को लेकर पुलिस प्रशासन की व्यवस्थाओं पर संतोष जताया। व्यापार मंडल के अध्यक्ष राजेश व्यास ने शहर में रह रहे बाहरी व्यक्तियों के भौतिक सत्यापन को लेकर मांग रखी। अध्यक्ष व्यास ने बताया कि शहर में बाहरी लोग मजदूरी एवं छुट्टीपुट व्यवसाय को अपना धंधा बनाकर कार्य करने के लिए आते हैं, वहीं शहर में चोरी एवं अन्य बड़ी वारदात करके

निकल जाते हैं। बाहर से आए हुए लोगों का भौतिक सत्यापन कार्यालय का मंगलवार को दौरा कर कार्यालय का निरीक्षण किया। इस दौरान शहर के गणमान्य नागरिकों एवं सीएलजी सदस्यों, महिला सखियों से वार्ता की।

इस अवसर पर पुलिस प्रशासन की सुरक्षा व्यवस्था, यातायात एवं महिला उरपीडन, सायबर क्राइम को लेकर महिला सखियों एवं सीएलजी सदस्यों से बहुरे क्राइम को लेकर के दिशा निर्देश दिए। वहीं प्राइवेट बस यूनियन के अध्यक्ष खुमान सिंह करनोत ने शहर की यातायात व्यवस्थाओं को लेकर पुलिस प्रशासन की व्यवस्थाओं पर संतोष जताया। व्यापार मंडल के अध्यक्ष राजेश व्यास ने शहर में रह रहे बाहरी व्यक्तियों के भौतिक सत्यापन को लेकर मांग रखी। अध्यक्ष व्यास ने बताया कि शहर में बाहरी लोग मजदूरी एवं छुट्टीपुट व्यवसाय को अपना धंधा बनाकर कार्य करने के लिए आते हैं, वहीं शहर में चोरी एवं अन्य बड़ी वारदात करके

## पाकिस्तान की ड्रोन एक्टिविटी को नेस्तनाबूद करने की तैयारी

राजस्थान-पंजाब-जम्मू बॉर्डर पर 12 डी4 एंटी-ड्रोन सिस्टम तैनात होंगे

बीकानेर, (निर्स)। बॉर्डर पर पाकिस्तान की ड्रोन एक्टिविटी को नेस्तनाबूद करने की तैयारी कर ली गई है। राजस्थान, जम्मू और पंजाब से सटी पाक सीमा पर 12 डी4 एंटी ड्रोन सिस्टम लगाए जाएंगे, जो हवा में तीन किमी रेडियस से 360 डिग्री कवरेज देंगे और दुश्मन के ड्रोन का पता लगाकर उसे मार गिराएंगे। सीमा पर से ड्रोन के जरिए होने वाली मादक पदार्थ और हथियारों की टांम क्षेत्र का महाकुंभ बाबा रामदेव मेला एवं शहरी सुरक्षा के साथ अपराधियों में भय एवं आम जनता में विश्वास पुलिस प्रशासन का बना हुआ है। इस अवसर पर एडिशनल एसपी प्रवीण कुमार, क्षेत्र के विभिन्न स्थानों के थाना अधिकारी एवं लोग उपस्थित रहे।

जगह-जगह लगे भंडारों में सुबह और शाम

जगह-जगह लगे भंडारों में सुबह और शाम

## राशिफल बुधवार 26 मार्च, 2025

चैत्र मास, कृष्ण पक्ष, द्वादशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत् 2081, धनिष्ठा नक्षत्र रात्रि 2:30 तक, सिद्ध योग दिन 12:25 तक, कौलव करण दिन 2:44 तक, चंद्रमा आज दिन 3:15 से कुम्भ राशि में संचार करेगा।  
ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-मकर, मंगल-मिथुन, बुध-मीन, गुरु-वृष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।  
आज राजयोग रात्रि 1:43 तक है। पंचक दिन 3:15 से आरम्भ होंगे।  
श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:30 तक, शुभ 11:02 से 12:23 तक, चर 3:35 से 5:06 तक, लाभ 5:06 से सूर्यास्त तक।  
राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:28, सूर्यास्त 6:37

चैत्र मास, कृष्ण पक्ष, द्वादशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत् 2081, धनिष्ठा नक्षत्र रात्रि 2:30 तक, सिद्ध योग दिन 12:25 तक, कौलव करण दिन 2:44 तक, चंद्रमा आज दिन 3:15 से कुम्भ राशि में संचार करेगा।  
ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-मकर, मंगल-मिथुन, बुध-मीन, गुरु-वृष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।  
आज राजयोग रात्रि 1:43 तक है। पंचक दिन 3:15 से आरम्भ होंगे।  
श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:30 तक, शुभ 11:02 से 12:23 तक, चर 3:35 से 5:06 तक, लाभ 5:06 से सूर्यास्त तक।  
राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:28, सूर्यास्त 6:37

**मेघ**  
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। अटके हुए कार्य शीघ्रतासुगमता से बनने लगे। दिन के मध्यान्ह व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

**सिंह**  
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**धनु**  
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाओं पर धन खर्च होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

**वृष**  
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**कन्या**  
व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

**मकर**  
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात घर-व्यवस्था के खर्चों में वृद्धि होगी।

**मिथुन**  
चन्द्रमा अग्रम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगे।

**तुला**  
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। नौकरियों/शिक्षा/व्यक्तियों को मानसिक तनाव बना रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी।

**कुंभ**  
आज अंगर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

**कर्क**  
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात अग्रम चन्द्र शुभ नहीं है।

**वृश्चिक**  
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिवर्तनों के सत्यों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**मीन**  
अपने आर्थिक मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक प्रयासों में सफल रहेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात अनावश्यक धन खर्च होगा।